International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 365-367

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 365-367
www.allresearchjournal.com
Received: 24-11-2018
Accepted: 27-12-2018

सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

वर्तमान सन्दर्भ मे विविधा

सोनू कुमार झा

प्रस्तावनाः

साहित्य अकादेमीसँ 1992 ई.मे पुरस्कृत पोथी 'विविधा' जकर रचनाकार छथि, वर्तमान मैथिली साहित्यिक स्तम्भ डा. भीम नाथ झा। हिनक कतेको कृति प्रकाशित अछि। ई जेहने मुर्धन्य कवि छथि तेहने विशिष्ट समीक्षक, जेहने कुशल सम्पादक तेहने अनुवादक आ ओहने प्रतिष्ठित निबन्धकार सेहो छथि। हिनक अठारह गोट उत्कृष्ट निबन्धक संकलन थिक 'विविधा'।

विविधाक अठारहो निबन्धकेँ तीन भाग उत्प्रेरण, स्फुरण तथा स्मरणमे बाँटल गेल अछि। तीनू भागमे छओ–छओ टा कऽ निबन्ध अछि। तीनू भाग अपन फराक–फराक परिचिति बनएबामे समर्थ अछि।

एहि संकलनक पहिल खंड अछि उत्प्रेरण। जेना कि नामहिसँ स्पष्ट अछि जे एहि खंडक छबो निबन्ध मूलतः मिथिला आ मैथिलीक समस्या दिश उत्प्रेरित करैत अछि। एहि खंडक पहिल निबंध अछि 'शुभागम हो माँ अहाँक आजु'। एहि निबन्धमे माँ दुर्गाक महनीयताकेँ नव दृष्टिसँ विचार कएल गेल अछि। लेखकक मानब छनि जे दुर्गा प्रकृतिसँ न्यायोचित क्रांतिक प्रतीक थिकीह। परंतु हमरा लोकनि विजया दशमीक अवसर पर उल्लास ओ विलासक प्रतिमूर्ति बना दैत छी। लेखक कहैत छथि जे, दुर्गाक आह्वान देवता लोकनिक कल्याणार्थ, महिषासुरक बध करबाक लेल भेल छल, मुदा आइ हुनक आह्वान मात्रा अलमस्तीक अग्रदूतिकाक रूपमे होइत अछि। देवता लोकनि हुनका अपन सभ अस्त्रा–शस्त्रा दऽ देने छलथि। अपन सभ शक्ति दऽ देने छलथि। मुदा आइ हमसभ हुनका चूड़ी आ लहठी दैत छी। हमरा लगैए जे तकरे कारण अछि जे आइ कतेको महिषासुर अवतरित भऽ गेल अछि आ ओकरा सोझाँमे भगवती सभ असहाय भऽ जाइत छथि। से तऽ हम सभ ठाम–ठाम देखिये रहल छी। लेखकक धारणा छनि जे 'जतहि ओ ततहि ज्वाल। जतहि ज्वाल ततहि ज्योति। जतहि ज्योति ततहि ज्ञान। जतहि ज्ञान ततहि शान्ति, ततहि समृद्धि।' [1] तेँ एहि निबन्धक माध्यमसँ लेखक माँ दुर्गाकेँ जनमानसमे वास करबाक हेतु प्रार्थना करैत छथि।

एहि खंडक अगिला चारिटा निबन्ध मैथिली भाषाक महत्व आ महाकवि विद्यापतिक स्मृति पर्व पर विचार कएल गेल अछि। 'मैथिली : सोपान नहि, सिंहासन'मे मैथिली भाषा आ साहित्य पर विचार व्यक्त कएल गेल अछि। मैथिली एकटा पवित्रा सिंहासन अछि जाहि पर बैसबाक हेतु पूर्ण निष्ठा चाही। मुदा आइ लोक एकरा सीढ़ी बना लेने अछि। कोनो उच्च पद पएबाक हो वा कोनो बड़का पुरस्कार लेबाक हो। मैथिलीक डारि धऽ लैत अछि आ भेटि गेलाक बाद एकरा कतिया दैत अछि। एहन व्यक्तिकेँ लेखक सावधान करैत कहैत छथि जे एकरा सीढ़ी नहि, सिंहासन बुझू। सीढ़ी जँ जमीन छोड़ि देत तऽ की हएत?' हुनक कहब छनि जे 'मैथिली भाषा विकासोन्मुख अछि, तथापि ओकरा शरीरमे शक्ति आ ऊर्जा भरबाक एखन आवश्यकता अछिये। ओ गतिशील अछि, एहि लेल जे ओहिमे जिजीविषा समाहित छैक।' [2]

एहि खंडक तेसर निबन्ध कविवर सीताराम झाक एक प्रसिद्ध काव्य पंक्तिकेँ आधार बनाकऽ निर्दिष्ट कएल गेल अछि। जकर अनुगूँज प्रायः मैथिलीक सभ समारोहमे सुनाइ दैत अछि। 'आगि अछि सलाइमे'। एहि निबन्धमे लेखक अपन क्षेत्राक प्रगति ओ उन्नयनक हेतु नियमित संघर्षरत रहबाक लेल प्रेरित करैत छथि।

एहि क्रमक अगिला दूटा निबन्ध 'विरोधी स्वरसँ सावधान' आ 'विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता' महत्वपूर्ण अछि। आइ मैथिलक जुटान होइत अछि तऽ ओ एकमात्रा विद्यापति पर्वक देन अछि। केहन महान कल्पना छल मैथिली दधीचि बाबू भोला लाल दासक, जाहि पर्वक शुरुआत ओ 15 नवम्बर 1929 ई. कऽ कयने छलाह, से आइ धरि अबैत–अबैत समारोहक रूप धऽ लेलक अछि। मैथिलीक प्रचार–प्रसार, एकर विकास आ साहित्य सर्जनामे ई बड़ सहायक सिद्ध भेल अछि। मुदा से किछु व्यक्तिकेँ अखरैत छनि आ ओ ओकरा बन्द करएबाक निमित्त अपन कोनोटा कसरि नहि छोड़ऽ चाहैत छथि। एहिसँ चेतबैत छथि लेखक अपन निबन्ध 'विरोधी स्वरसँ सावधान'मे।

एहि खंडक अंतिम रचना अछि 'डायरीक किछु पन्ना'। अपन डायरीक छओ टा पन्नामे निबन्धकार मैथिली आ कतोक मैथिली साहित्यकारक विषयमे महत्वपूर्ण बात कहलनि अछि। जेना मैथिलीक विकासमे मिथिला मिहिर आ स्वदेशक योगदान, पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटब। मैथिली साहित्यक यशस्वी रचनाकार प्रो. हरिमोहन झाक निधन पर शोक संवेदना आ प्रभास कुमार चौधरीकेँ विद्यापति स्मारक समिति, राँची द्वारा 'वैदेही' पुरस्कारसँ सम्मानित करबाक बात कहल गेल अछि।

ललित निबन्ध शैलीमे लिखल 'विविधा'क दोसर खंड जाहिमे छओ गोट रचना अछि, एकरामे कल्पनाक बहुलता अछि। परिणामतः लेखक एकरा 'स्फुरण' शीर्षकक अंतर्गत रखने छथि।

एहि खंडक पहिल रचना थिक 'बसात'। बसात तँ वएह जे निरन्तर बहैत रहय, मुदा से कहाँ होइछ। कखनहुँ पुरिबा–पछबाक झाँट तऽ कखनो अन्हर–बिहाड़ि आ कखनो एकदमे गुम्म! सिहकबो नहि करत। बसातक एहि प्रकृतिसँ सभ गोटे तऽ अवगत छिहे। निबन्धकार वायुक दूटा रूप माननलि अछि। 'एकटा ओ जे मनुष्यक प्राणाधार अछि। ओकर छातीक धुकधुकी अछि, जे ओकर जीवन अछि। आ दोसर जे शरीरक बाहरी हिस्साकेँ स्पर्श करैत अछि।' [3] एहि लेखमे लेखकक कहब अछि जे लोककेँ बसातक संगहि दौड़बाक चाही। अहुना कहल गेल अछि जे नाविक वएह जे बसातक रूखि चिन्हए। आ से, मैथिलीयोकेँ बसातक संगहि चलऽ पड़तैक तखने ओकर सम्पूर्ण विकास हएत। तखने ओ आगू बढ़त।

व्यंग्यात्मक शैलीमे लिखल निबन्ध 'गार्जन', जाहिमे लेखकक व्यक्तिगत जीवनक अनुभूति होइत अछि। लेखक गार्जियनसँ ततेक आतंकित छथि जे गार्जियन शब्दक बदला गार्जन शब्दक प्रयोग कएलनि अछि। आ से एखनो ई देखबामे अबैत अछि जे किछु गार्जियन लोकनि परिवारमे अपन वर्चस्व कायम रखबाक लेल सदैव दोसराकेँ नीच देखेबाक प्रयास करैत रहैत छथि, जाहिसँ ओहि सदस्य सभमे कुंठा जन्म लैत अछि आ अन्ततः होइत अछि कलह। आ से ई प्रवृत्ति किछु साहित्यकार लोकनिमे सेहो छनि। ओ लोकनि अपनासँ कनिष्ठ साहित्यकारक नीको रचनाकेँ नीक नहि मानैत छथि। लेखक एहन गार्जियन सभकेँ अपन प्रवृति बदलबाक अनुरोध करैत छथि।

'सभागाछी' मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे अवस्थित अछि। जतए पहिने लाखक लाख संख्यामे मैथिल उपस्थित होइत छलाह। जतय बर आ कन्या दुनू पक्ष एकत्रित होइत छलाह। दुनू पक्ष सुगमतापूर्वक विवाह समतुल करैत छलाह, मुदा आजुक एहि घर कथाक समयमे ओकर ग्रास भऽ गेल अछि। ओकर दिनानुदिन होइत दुर्बल स्थिति दिस एहि निबन्धमे ध्यान आकृष्ट कएल गेल अछि।

'आश्चर्य मुदा किएक' एहि निबन्धमे निबन्धकार कतेको उदाहरण दऽ कऽ ई बुझएबाक प्रयास कएलनि अछि जे जखन अपन पूर्व धारणाक विपरीत किछु देखबामे अबैत अछि तखने आश्चर्यक जन्म होइत अछि। निबन्धकारक धारणा छनि जे 'आश्चर्य परकिया नायिका थिक, स्वकीया नहि। [4] ई निबन्ध पूर्णतः मनोवैज्ञानिक तथ्य पर आधारित अछि।

'कथा लिखबाक अछि'मे लेखनक सन्दर्भमे अपन विचार व्यक्त कएलनि अछि। एखनुक जे समय अछि ताहिमे एके व्यक्ति कथा लिखताह, निबन्ध सेहो लिखताह। गजलक रचना सेहो वएह करता आ कविता लिखब तऽ हुनक प्रधान कर्म छनि। रचना पढ़लाक बाद पाठक अपन कप्पार पटकैत रहथु। एहने व्यक्ति सभकेँ अयना देखेबाक काज करैत अछि ई निबन्ध। एकदिन जखन लेखककेँ आकाशवाणीक लेल कथा लिखबाक आग्रह कएल जाइत छनि तँ ओ द्वन्द्वमे फँसि जाइत छथि, किएक तँ ओ कथा लेखन नहि करैत छथि। मोन होइत छनि जे ओकरा मना कऽ देथि। एहि लेल हुनका उपहास सेहो सहय पड़ैत छनि।

एहि खंडक अन्तिम निबन्ध अछि 'नामक समस्या', जाहिमे एके नामक कएकटा व्यक्तिकेँ रहलासँ कतेक समस्या होइत अछि से देखाओल गेल अछि। वस्तुतः एहि निबन्धमे विस्फोटक जनसंख्या वृद्धि दिस इशारा कएल गेल अछि, जे दिनानुदिन आओर भयावह भेल जा रहल अछि।

विवेच्य पुस्तकक अन्तिम खंड अछि 'स्मरण'। एहिमे मैथिली साहित्यक महान विभूति लोकनिक स्मरण ओ हुनका संग निबंधकारक बिताओल क्षणक जीवन्त वर्णन अछि। एहि खंडमे सभसँ पहिने स्मरण कएल गेल छनि आद्य प्राध्यापक विद्यानिधि पंडित खुद्दी झाकेँ। निबन्धकार हुनक बहुपक्षीय गुणक चर्चा कएलनि अछि। पंडित खुद्दी झा छओ गोट ग्रंथक रचना कएने छथि। ओ मूलतः व्याकरणाचार्य छलाह, मुदा न्याय, दर्शन, मीमांसा, काव्य, धर्मशास्त्रा आदि क्षेत्रामे सेहो अपन विद्वताक परिचय देलनि अछि। तेँ हुनका चतुरानन पंडितक संज्ञा देल गेल छलनि। मैथिली साहित्यक प्रकाश स्तम्भ, जे एक दिस कन्यादान, द्विरागमन सन उपन्यास लीखि मैथिली जगतमे क्रांति आनि देलनि, तऽ दोसर दिस खट्टर ककाक निर्माण कऽ मैथिलकेँ मात्रा नहि अपितु समस्त साहित्य जगतकेँ विचारबाक लेल बाध्य कऽ देलनि। एहन पुरुष प्रो. हरिमोहन झाक अंतिम समयक दुःखद स्थितिक वर्णन 'जीवन यात्राक नायक पथिक' निबन्धमे भेल अछि। निबन्धकारक संग जे हुनक आत्मीयता छलनि तकर सद्यः दर्शन होइत अछि एहि निबन्धमे। एहि सन्दर्भमे लेखकक कहब छनि 'लोक अबैत रहत, जाइत रहत, हरिमोहन बाबूक साहित्य ओहिना चमकैत रहत। हुनक व्यक्तित्वक इन्द्रधनुषी कथा पसरैत रहत, अनादि काल धरि लोककेँ हँसबैत रहत।' [6]

लोककथा ओ दंत कथा पर आधारित उपन्यास लिखनिहार मैथिली साहित्यक मणिपद्म छलाह। एहि महान उपन्यासकारक स्मरण 'कौसरक कमल' मे कएल गेल अछि। ई मणि आ पद्म दुनू छलाह। एहि कमलक सुगन्ध मैथिली साहित्यमे सभतरि भेटत। निबन्धकार हिनका मैथिलीक 'उत्थानकर्त्ता'क संज्ञा देलनि अछि।

नऽब–नऽब समस्याक उत्थान कएनिहार आ संगहि तकर समाधान सेहो तकनिहार। मैथिली आंदोलनकेँ गतिशीलता प्रदान कएनिहार आ मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्टक उद्भव ओ विकास, 'मैथिली साहित्यक आंदोलन' सन दर्जनो पुस्तकक निर्माता पंडित राजेश्वर झाक स्मरण भेल अछि 'एक छड़ी बिजली'मे। एहन महान व्यक्तिक प्रति विद्वान लोकनिक उपेक्षाकेँ देखि निबन्धकारक मोन कराहि उठैत छनि। एहिसँ स्पष्ट अछि, किन्तु एतबा विशेषतासँ युक्त रहितो पटना सन पैघ शहरक अस्पतालमे मृत्यु शय्या पर तीन दिन धरि संज्ञाहीन रहलाक उपरांत मृत्यु भेलनि तथापि साहित्यकार लोकनिमे कोनो उत्तेजना अथवा कोनो सुगबुगाहटि नहि पसरल। निश्चित रूपसँ ई एकटा दुःखद स्थिति मानल जाएत।' [7]

आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर, सर्वप्रथम अपन रचनामे ब्राह्मणेतर पात्राकेँ अननिहार, पृथ्वीपुत्रा सन आँचलिक उपन्यासक रचयिता, ललितक साहित्यिक महत्वक आकलन कएल गेल अछि 'क्षण–भंगुरतासँ अमरत्व दिस' निबन्धमे एक दिस ललित जतय अपन लेखनसँ युगान्तकारी परिवर्तन अनलनि। ओतहि दोसर दिस राजकमल चौधरी, प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, जीवकांत, गंगेश गुंजन, धूमकेतु सन वरेण्य साहित्यकारकेँ मैथिलीमे रचना करबाक लेल प्रेरित सेहो कएलनि। ओना तऽ ललितक मृत्यु 14 अप्रैल 1983 ई. कऽ भेलनि, मुदा लेखकक मानब छनि जे ओ मुइला नहि आत्महत्या कएलनि। कारण जे लेखक ललित तऽ अपन मृत्युसँ डेढ़ दशक पूर्वहि रचनाकारक रूपमे मरि चुकल छलाह। हुनक धारणा भऽ गेल छलनि जे साहित्य रचना क्षणभंगुर अछि, स्थायी आनन्द तऽ तंत्रा साधनामे अछि। मुदा हुनका अमरत्व वएह साहित्य देलकनि। 'बिहुँसैत आ नोसि लैत' एहि संकलनक अन्तिम निबन्ध अछि। छात्रावस्थहिसँ जे अपन लेखनीक माध्यमसँ स्थायी ओ सम्मानित

स्थान बना लेलनि आ 'भलमानुस' सन उपन्यासक रचना कएलनि, ओ व्यक्ति छलाह योगानन्द झा। एहि निबन्धमे लेखक ओहि निष्ठावान व्यक्तिक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विवरण प्रस्तुत कएलनि अछि।

निष्कर्षतः

हम कहि सकैत छी जे आलोच्य कृतिक तीनू खंडक रचना सभ व्यापक अछि। एहिमे भाषामे लालित्यक व्याप्ति भेटैत अछि। चूँकि विविधाक भाषा वास्तविक जीवनसँ लेल गेल अछि तेँ ई लेखकक संवेदना शिल्पमे प्रतिफलित भेल अछि।

सन्दर्भ संकेतः

1. विविधा : 17 – भीमनाथ झा
2. भाव–भूमि रसवंत : 293 – विपिन बिहारी ठाकुर
3. तत्रौव : 305 – अशोक कुमार ठाकुर
4. तत्रौव : 295 – विपिन बिहारी ठाकुर
5. विविधा : 76 – भीमनाथ झा
6. तत्रौव : 104 – भीमनाथ झा
7. भावभूमि रसवंत : 300 – विपिन बिहारी ठाकुर